

## ॥ इगवा ॥

रंग सोरंगे रंग्या रंगिलो, रसभस थया छे छबिलो, पछी नाथ कडे सुषो तमे; मागो इगवा ते आपिये अमे ॥१॥  
अेम करी अलबेले वात, सुषी जन थया रणियात; वाइं मागशुं अमे महाराज, देज्यो राज थई तमे राज ॥२॥  
त्यारे राज कडे राज छेये, मागो मनमान्युं अमे दैये; त्यारे बोढ्या जन जोडी डाय, तम पासो अे मागिये नाथ ॥३॥  
महाभणवंत माया तमारी, जेणे आवरियां नरनारी; अेवुं वरदान दिज्ये आपे, अेड माया अमने न व्यापे ॥४॥  
वणी तमारे विषे ज्वन, नावे मनुष्यबुद्धि कोई दन; जेजे लीणा करो तमे लाल, तेने समजुं अलोडिक प्याल ॥५॥  
सतसंगी जे तमारा कडावे, तेनो केदि अभाव न आवे; देश काण ने क्रियाअे करी, केदि तमने न लुविये हरि ॥६॥  
काम कोष ने लोभ कुमति, मोड व्यापीने न इरे मति; तमने लजतां आडुं जे पडे, मागिये अे अमने न नडे ॥७॥  
अेटळुं मागिये छेये अमे, देज्यो दया करी हरि तमे; वणी न मागिये अमे जेड, तमे सुषी लेज्यो हरि तेड ॥८॥  
केदि देशो मां देहाभिमान, जेणे करी विसरो लगवान; केदि कुसंगनो संग न देजे, अधर्मथकी उगारी लेज्यो ॥९॥  
केदि देशो मां संसारी सुष, देशो मां प्रलु वासविमुष; देशो मां प्रलु जक्त मोटाई, मद्द मत्सर ईरध्या कांई ॥१०॥  
देशो मां देडसुष संयोग, देशो मां हरिजननो वियोग; देशो मां हरिजननो अभाव, देशो मां अडंकारी स्वभाव ॥११॥  
देशो मां संग नास्तिकनो राय, मेळी तमने जे कर्मने गाय; अे आदि नथी मागता अमे, देशो मां दया करीने तमे ॥१२॥  
पछी बोढीया श्यामसुंदर, ज्ञओ आप्यो तमने अे वर; मारी मायामां नही मुंजाओ, देहादिकमां नही बंधाओ ॥१३॥  
मारी क्रियामां नहि आवे द्रोष, मने समजशो सदा अद्रोष; अेम कहुं थई रणीयात, सडुअे सत्य करी मानी वात ॥१४॥  
दीधा दासने इगवा अेवा, बीजूं कोष समर्थ अेवुं देवा; अेम रम्या रंगलर छोणी, हरिसाथे हरिजन टोणी ॥१५॥